

कृष्ण संबंधी चिंतन की एकांगिता

याद रही माखन की चोरी, ऊखल से तव बंधन
जनमानस में बसे कृष्ण बन, मात्र यशोदानंदन ।
गोपी जनवल्लभ कहलाए, मुरली मृदुल बजाई
बार बार महिमा रसिकों ने, इतनी ही तव गाई ॥ 1 ॥

छोड़ दिया बृज आठ वर्ष में, सवा सदी का जीवन
याद बहुत कम करता, कैसा, भारत का है जनमन ।
शिशु घाती अत्याचारी उस बली कंस का क्षण में
बिना शस्त्र वध किया उसीके राजभवन प्रांगण में ॥ 2 ॥

चूर्ण किया चाणूर देह को, मुष्टिक मल्ल गिराया
मत्त कुवलयापीड प्रपीडित किया स्वधाम पठाया ।
उंगली पर ही उठा लिया गिरि, रहे कहाते नटवर
नाम धरा रणछोड़, न फिर भी कुपित हुए तुम जन पर ॥ 3 ॥

सकल भुवनपति होकर भी तुम, बने न भूपति भू पर
उग्रसेन ही शासन करते रहे पुरी के ऊपर ।
देते दंड कुकर्मा का तुम, नियत नियम कर्मा का
किंतु न लेखा रखते, निजप्रति कृत बहुदुष्कर्मा का ॥ 4 ॥

नहीं एक शिशुपाल कोटिशः यहां अनास्था धर हैं
कृपादृष्टि तुम समदर्शी की, देखो तो सब पर है ।
चेदिराज शिरकर्तन में भी कारण था मखबाधा
सुहृद पांडवों का हित तुमने, उस हिंसा से साधा ॥ 5 ॥

नहीं मान अपमान स्वयं का, चिंता बस जनहित की
मथुरा त्याग बसाया नवपुर, करुणा थी मधुजित की ।
मात्र युक्ति से बने बली उस कालयवन के जेता
कौन जगत में हुआ तुम्हारे जैसा नीति प्रणेता ॥ 6 ॥

पंच जनासुर मार बचाया अंगज सान्दीपनि का
गुरुदक्षिणा निभाई अनुपम, यह दृष्टांत अवनि का ।
याद रखा पर कथावाचकों ने तेरा गोचारण
भूल गए वृष अघ मधु जैसे असुरों का द्रुत दारण ॥ 7 ॥

षोडश सहस्र युवतियों का कर मोचन नरकासुर से
किया भयानक युद्ध भूमिसुत उस दुर्दांत असुर से ।
भेज दिया यमलोक पाप का भार हुआ कुछ हल्का
हमें सिखाया रक्षण करना अबला और अबल का ॥ 8 ॥

पावक वृत्त सुरक्षित जाकर घेरा शोणितपुर को
पराभूत कर दिया घोरतर रण में बाणासुर को ।
छुड़ा लिए अनिरुद्ध मान भी उषा प्रणय का रखकर
कर परिणीत असुर दुहिता को ले आए जनसुखकर ॥ 9 ॥

बने दूत भी धर्मराज के, क्षेम हेतु याचक भी
धर्मस्थापन हेतु बने फिर रण के संचालक भी ।
देख विपुल जनहानि भीष्मकृत, वचन भंग कर सायुध
हुए कृष्ण, जनहानि देखकर, रहो न मौन निरायुध ॥ 10 ॥

सकल शास्त्र का सार दे दिया रण में भी अर्जुन को
भीष्म,व्यास, राधेय,विदुर ही जान सके थे जिनको ।
दे वेदांत तत्व हिमवत पर, प्रेषित कर उद्धव को
देखा निर्विकार अपने ही कुलघातक विप्लव को ॥ 11 ॥

कौन जान सकता अशेषतः तुम्हें ब्रह्म हो माधव,
वृथा पंडितम्मन्य मचाते रहे युगों से कटुरव ।
किंतु आज तव कथा बनायी रास रंग पटु गायन
एकांगिता हुई चित्रण में, छूटा ज्ञान रसायन ॥ 12 ॥

संस्कृति सुरसरि में आ बैठा जो सहस्त्रफन नाग
पुण्य सलिल में नित्य छोड़ता घातक विष का झाग ।
हुए अरक्षित हैं नर नारी, प्राण त्यागतीं धेनु
धरो उरग दलनार्थ चक्र तुम, बल दो, छोड़ो वेणु ॥ 13 ॥

- शिव कुमार मिश्र
भोपाल
19 अगस्त 2022

जन्माष्टमी पर शुभकामनाएं